सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक: 78 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार 23 अप्रैल, 2026
मूल्य ₹ 3/-

ओछे मनुष्य का साथ छोड़ देना चाहिए। हर अवस्था में उससे हानि होती है, जैसे अंगार जब तक गर्म रहता है तब तक शरीर को जलाता है और जब ठंडा कोयला हो जाता है तब भी शरीर को काला ही करता है।

-रहीम दास

इकाना में लखनऊ की लगातार सातवी... 7 | महिला आरक्षण की आड़ में बड़ा... 3 | बीजेपी सपा कार्यकर्ताओं के साथ... 2

सपना बनाम संघर्ष, पश्चिम बंगाल व तमिलनाडु में बरसे वोट

बंगाल में 16 जिलों की 152 सीटों पर वोटिंग, कड़ी सुरक्षा के बीच लंबी कतारें

» सुबह से ही निकले वोटर दिग्गज नेताओं और कलाकारों ने डाले वोट

» तमिलनाडु में भी सियासी संग्राम तेज

» राहुल गांधी का आरोप- भाजपा तमिलनाडु की संस्कृति, भाषा और परंपराओं को खत्म कर देगी

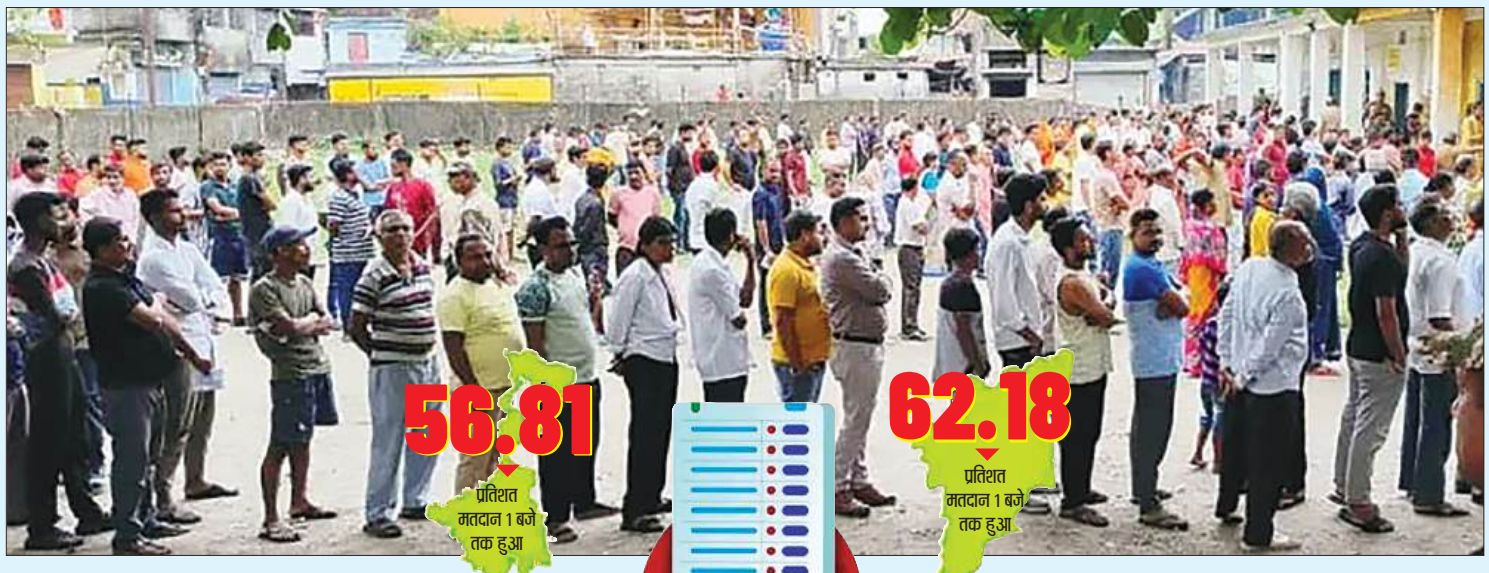

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकतंत्र का सबसे बड़ा उत्सव अपने चरम पर है और आज की सुबह सिर्फ सूरज नहीं सियासत की तपिश भी साथ लेकर आई है। पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव के लिए वोट डाले जा रहे हैं और दोनो ही राज्यों में वोटिंग ट्रेंड जबर्दस्त है। लंबी कतारे हैं और हर कोई बस अपने वोट का इस्तेमाल करना चाहता हुआ नजर आ रहा है। इन दो अलग–अलग राज्यों दो अलग राजनीतिक संस्कृतियों में बस एक ही सवाल है कि सत्ता किसके हाथ? पश्चिम बंगाल में आज 16 जिलों की 152 विधानसभा सीटों पर मतदान हो रहा है। सुबह से ही बूथों पर लंबी कतारें दिखाई दे रही है।

भारत निर्वाचन आयोग की ओर से जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार आज दोपहर1 बजे तक पश्चिम बंगाल में मतदान प्रतिशत 62.18 प्रतिशत रहा और तमिलनाडु में 56.81 प्रतिशत दर्ज किया गया। पश्चिम बंगाल में 16 जिलों में पहले चरण की वोटिंग हो रही है। यह सिर्फ वोट नहीं बल्कि यह विश्वास की कतार है। एक तरफ ममता बनर्जी जो खुद को मिट्टी की बेटी कहकर जनता के बीच खड़ी हैं और दूसरी तरफ बीजेपी जिसने बंगाल में अपने सबसे बड़े विस्तार का दांव खेला है और पीछे खड़े हैं नरेंद्र मोदी जिनका सीधा संदेश है कि उत्साह के साथ मतदान करें। लेकिन बंगाल की कहानी सिर्फ वोटिंग तक सीमित नहीं है यह आरोपों प्रत्यारोपों और टकराव की भी कहानी है। चुनाव का शंख बजते ही एसआईआर से लेकर कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी के आरोप, आईपैक पर कार्रवाई, और सड़कों से लेकर अदालत तक की लड़ाई यह चुनाव साधारण नहीं रहा। ममता बनर्जी खुद वकील बनकर अदालत में उतरीं धरने पर बैठीं और हर मोर्चे पर लड़ती नजर आई। उन्होंने एक ऐसी छवि बनाई जिससे उनके समर्थक उन्हें शेरनी कह कर पुकारने लगे। दूसरी तरफ तमिलनाडु जहां सियासत का रंग अलग है लेकिन तापमान उतना ही ऊंचा। यहां बीजेपी पर आरोप है कि वह राज्य की भाषा संस्कृति और परंपराओं को बदलना चाहती है। राहुल गांधी ने इस मुद्दे को खुलकर उठाया है। सवाल अब वही है कि क्या बंगाल में बीजेपी का सपना साकार होगा या ममता बनर्जी एक बार फिर उस सपने को तोड़ देंगी? और तमिलनाडु में क्या राजनीतिक समीकरण बदलेंगे या परंपरा कायम रहेगी? आज वोट डाले जा रहे हैं लेकिन असल में लिखा जा रहा है आने वाले पांच साल का इतिहास।

मतदान की मार सियासत की धार, बंगाल-तमिलनाडु में आज जनता लिख रही सत्ता का फैसला

सतर्कता भी साफ नजर आई

हालांकि इस उत्साह के बीच सतर्कता भी साफ नजर आ रही है। पश्चिम बंगाल के कुछ संवेदनशील इलाकों से हल्के तनाव और नोकझोंक की खबरें जरूर आई हैं, लेकिन सुरक्षा बलों की तैनाती और निगरानी के चलते हालात नियंत्रण में बने हुए हैं। कुल मिलाकर माहौल ऐसा है जहां जोश और जिम्मेदारी साथ साथ चल रहे हैं। मतदाता न केवल अपने अधिकार का इस्तेमाल कर रहे हैं बल्कि यह भी सुनिश्चित करना चाहते हैं कि प्रक्रिया शांतिपूर्ण और निष्पक्ष बनी रहे। यही संतुलन इस चुनाव की सबसे बड़ी ताकत बनकर उभर रहा है।

रंजनीकांत,कमल हसन ने डाले वोट विजय के कार्यकर्ता गिरफ्तार

चुनाव में रजनीकांत, कमल हसन व उनकी बेटियों समेत कई दिग्गजों ने भी वोट डाले। वहीं तिरुपत्तूर सीट पर मतदान करते समय वीडियो बनाना एक्टर व नेता विजय के एक कार्यकर्ता को महंगा पड़ गया। तमिगा वेत्रि कषगम के कार्यकर्ता शक्तिवेल को मतदान केंद्र के अंदर वोट डालते हुए वीडियो रिकॉर्ड करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया अधिकारियों के मुताबिक, शक्तिवेल ने मतदान कक्ष के भीतर मोबाइल फोन से पार्टी के सीटी चुनाव चिन्ह पर वोट डालते हुए खुद का वीडियो बनाया।

लोकतंत्र का जीवंत चेहरा

पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के मतदान केंद्रों पर आज लोकतंत्र का जीवंत चेहरा साफ दिखाई दे रहा है। सुबह की पहली किरण के साथ ही ग्रामीण इलाकों से लेकर शहरी केंद्रों तक मतदाताओं की लंबी कतारें लगनी शुरू हो गईं। कई जगहों पर लोग निर्धारित समय से पहले ही बूथों के बाहर पहुंच गए मानो अपने वोट के जरिए अपनी बात कहने की एक बेचैनी हो। महिलाओं की भागीदारी इस बार खास तौर पर उल्लेखनीय है। कई बूथों पर महिलाओं की कतारें पुरुषों से लंबी नजर आईं जो बदलते सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता का संकेत है। वहीं पहली बार वोट डालने वाले युवाओं में भी उत्साह देखने को मिला। सेल्फी प्वाइंट्स पर तस्वीरें खिंचवाते युवा सिर्फ एक ट्रेंड नहीं बल्कि लोकतांत्रिक भागीदारी का नया चेहरा पेश कर रहे हैं।

कुमारगंज व मुर्शिदाबाद में हिंसक झड़प

पश्चिम बंगाल में जारी चुनावी घमासान के बीच कुमारगंज व मुर्शिदाबाद से एक बेहद तनावपूर्ण और हिंसक घटना सामने आई है, जिसने पूरे सियासी माहौल को और भड़का दिया है। भाजपा उम्मीदवार सुवेंदु सरकार पर भीड़ द्वारा कथित हमला किए जाने का वीडियो सामने आया है, जिसमें उनके साथ धक्का-मुक्की और हाथापाई होती दिख रही है। इस हमले में उनके कान से खून निकलता भी नजर आया, जिसके बाद उन्हें अपनी जान बचाकर बॉडीगार्ड के साथ मौके से निकलना पड़ा। इस घटना के बाद भाजपा नेता ने सत्ताधारी टीएमसी सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए इसे सियासी साजिश करार दिया है। घटना के बाद पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने बताया कि उनके पोलिंग एजेंट्स को 8-10 बूथों से जबरन बाहर निकाल दिया गया था, लेकिन उन्होंने खुद हस्तक्षेप कर उन्हें वापस अंदर जाने दिलाया। जब वह बूथ नंबर 24 पर स्थिति देखने पहुंचे, तो उन पर और उनकी टीम पर हमला किया गया, ताकि डर का माहौल बनाया जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय सुरक्षा बल मौजूद थे, लेकिन उस समय उनके साथ सिर्फ उनका बॉडीगार्ड था। मुर्शिदाबाद का नाओदा क्षेत्र एक बार फिर राजनीतिक टकराव और तनाव का केंद्र बन गया है। मतदान प्रक्रिया के दौरान शिवनगर गांव में सत्ताधारी टीएमसी और एजेंयूपी के प्रमुख हुमायूं कबीर के बीच तीखी झड़प की खबर ने माहौल को गरमा दिया। आरोपों और प्रत्यारोपों के बीच स्थिति तेजी से बिगड़ती नजर आई। हुमायूं कबीर ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि टीएमसी ने उनकी पार्टी के कई उम्मीदवारों को मोटी रकम देकर चुनाव मैदान से हटने के लिए प्रभावित किया।

» भाजपा प्रत्याशी पर भीड़ का हमला

» टीएमसी व हुमांयु कबीर की पार्टी के बीच मारपीट

बीजेपी सपा कार्यकर्ताओं के साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार करती है : अखिलेश यादव

» बोले सपा प्रमुख- नफरत फैलाना भाजपा का एजेंडा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भाजपा पर करारा प्रहार किया है। उन्होंने कहा कि नफरत फैलाना और समाज में दूरी बनाना ही भाजपा का एजेंडा है। वह समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार करती हैं।

अखिलेश सपा के प्रदेश कार्यालय में अनुसूचित जाति व जनजाति के लिए सुरक्षित सीटों के पूर्व प्रत्याशियों और नेताओं की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा लोकतंत्र के साथ छल कर रही है। वह महिला आरक्षण को लेकर भ्रम फैला रही है। देश में महिला आरक्षण कानून लागू हो गया है। महिला आरक्षण बिल को 23 में संसद से सर्व सहमति से पास कर दिया है, लेकिन भाजपा के नेता झूठ बोलने से नहीं बाज आ रहे है। अखिलेश यादव ने पार्टी नेताओं को भाजपा से सावधान करते हुए कहा कि 27 के चुनाव में कोई चूक नहीं होनी चाहिए। भाजपा से जनता का भरोसा खत्म हो चुका है। भाजपा का हथियार चालाकी भरा है। जनता उसकी चालाकी को समझती है। इस बार भाजपा को सत्ता से बाहर जाना ही है। इस अवसर पर पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र चौधरी, समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष समाजवादी पार्टी ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी को ज्ञापन देकर मांग की है कि नो-मैपिंग तथा लॉजिकल एरर के 3,50,436 मतदाता जिनको सुनवाई अधिकारी ने अपने फैसले में अयोग्य मतदाता घोषित कर दिया है, उनकी सूची दी जाए। ऐसे मतदाताओं को डीएम के यहां अपील करने की अंतिम समय सीमा 25 अप्रैल 2026 से 15 दिन और आगे तक बढ़ाई जाए, जिससे अपील के माध्यम से पात्र मतदाता बनकर आगामी विधानसभा चुनाव में मतदान कर सके। ज्ञापन में कहा गया कि ऐसे मतदाता 2003 से पहले और उसके बाद से अभी तक मतदान करते आ रहे हैं। यह सभी वैध मतदाता है और भारत के नागरिक हैं। नो-मैपिंग तथा लॉजिकल एरर के मतदाताओं को सुनवाई में अयोग्य मतदाता घोषित करने के फैसले की जानकारी कारण सहित मतदाताओं को उपलब्ध नहीं कराई गयी है। ज्ञापन देने वालों में केके श्रीवास्तव, डॉ. हरिश्चंद्र सिंह और राधेश्याम सिंह शामिल थे।सीमा राजभर मौजूद रहीं।

देश के प्रधानमंत्री के बारे में व्यक्तिगत टिप्पणी करने का कोई औचित्य नहीं : अवधेश प्रसाद

अयोध्या से समाजवादी पार्टी के सांसद अवधेश प्रसाद ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बयान पर असहमति जताई है। उन्होंने कहा कि भारत का एक गौरवशाली इतिहास है, ऐसे देश के प्रधानमंत्री के बारे में व्यक्तिगत टिप्पणी करने का कोई औचित्य नहीं है। अवधेश प्रसाद ने आगे कहा, यह अलग विषय है कि सरकार की नीतियों और कार्यपद्धति का विरोध कर सकते हैं, लेकिन व्यक्तिगत आक्षेप के लिए लोकतंत्र में कोई जगह नहीं है। लोकतंत्र में कतई भी इसकी छूट नहीं है।

पप्पू यादव के बयान से सपा का किनारा

उन्होंने बिहार के पूर्णिया से सांसद पप्पू यादव की महिलाओं को लेकर की गई टिप्पणी पर भी तीखी प्रतिक्रिया दी। अवधेश प्रसाद ने कहा, यह उनका निजी विचार हो सकता है, जहां तक महिलाओं के प्रति विचारधारा है, समाजवादी पार्टी भी उस विचारधारा पर चलती है, जहां नारी की पूजा होती है. पप्पू यादव की क्या विचारधारा है, हम इस बहस में नहीं पड़ते हैं।

महिला आरक्षण सरकार का एक राजनीतिक खेल

इसी बीच, समाजवादी पार्टी के सांसद ने महिला आरक्षण विधेयक पर कहा, यह सरकार का एक राजनीतिक खेल था। नारी शक्ति वंदन अधिनियम 023 में पास हो चुका था. यह सभी की सहमति से पास हुआ था। समाजवादी पार्टी और अखिलेश यादव समेत पूरा विपक्ष महिला विधेयक के पक्ष में है, लेकिन बीजेपी चालाकी से महिला आरक्षण विधेयक की आड़ में जातीय जनगणना और परिसीमन लाकर देश के पिछड़ों, दलितों और अल्पसंख्यकों का हक मारना चाहती थी. यह चतुराई थी, जिसमें बीजेपी को हार मिली। उन्होंने फिर से दोहराते हुए कहा कि महिलाओं से जुड़ा बिल पहले ही पास हो चुका था. इस बार लाया विधेयक सिर्फ एक झुमा था. यह बीजेपी का एक राजनीतिक खेल था।

बिहार के पास वेतन देने के लिए पैसे नहीं : तेजस्वी

» वित्तीय कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार से आर्थिक व्यवस्था बेहाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के नेता और बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने एनडीए सरकार की आलोचना करते हुए उस पर बिहार में व्यापक वित्तीय कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया।

एक्स पर एक पोस्ट में यादव ने कहा कि राज्य व्यापक वित्तीय संकट का सामना कर रहा है और हाल ही में गंभीर निधि की कमी के कारण निधि निकासी और व्यय नियंत्रण के संबंध में दूसरा पत्र जारी किया है। उन्होंने एनडीए प्रशासन पर चुनाव पूर्व वितरण के लिए सरकारी खजाने की लूट का आरोप लगाया, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक पेंशन, छात्र ऋण और कर्मचारियों के वेतन में देरी हुई। यादव ने कहा कि अपनी सीटें बचाने के लिए, भ्रष्ट सेवानिवृत्त और समझौतावादी उच्च अधिकारियों और एजेंसियों से भयभीत भुंजा गिरोह ने निष्क्रिय मुख्यमंत्री से मुलाकात की और खस्ताहाल सरकार से चुनाव से पहले अंतिम 30 दिनों में 41,000 करोड़ रुपये वितरित करवा लिए।उन्होंने आगे कहा कि इससे आवश्यक कल्याणकारी योजनाओं के लिए लगभग कोई धनराशि उपलब्ध नहीं रह गई है। उन्होंने कहा कि अब कई महीनों से एनडीए सरकार के पास बुजुर्गों को सामाजिक पेंशन देने, छात्रों के क्रेडिट कार्ड के बकाया का भुगतान करने, छात्रों को छात्रवृत्ति देने या कर्मचारियों को वेतन और पेंशन देने के लिए भी कोई धनराशि नहीं बची है - क्योंकि भ्रष्टाचार ने सरकारी खजाने को खाली कर दिया है। यादव ने आगे दावा किया कि राज्य उधार के पैसों पर चल रहा है, और बताया कि उस पर 4 लाख करोड़ रुपये का कर्ज है और उस पर प्रतिदिन ब्याज देना पड़ता है। आरजेडी नेतृत्व के नया बिहार ढांचे के अनुसार, यह स्थिति न केवल धन की कमी बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण भी है। यादव ने कहा कि प्रणालियों, तंत्रों और साजिशों पर बनी यह अस्थायी सरकार अब ब्याज सहित उधार के पैसों पर चल रही है, यानी कर्ज पर। यह भ्रष्ट सरकार सिर्फ ब्याज चुकाने में ही प्रतिदिन 100 करोड़ रुपये से अधिक खर्च कर रही है। स्थिति ऐसी है कि एनडीए सरकार ने बिहार पर लगभग 4 लाख करोड़ रुपये या उससे अधिक का कर्ज लाद दिया है।

पूर्व सीएम हुड्डा के हलके सांपला नपा चुनावी हलचल

» कांग्रेस छोड़कर आए प्रवीण कोच को दिया बीजेपी ने चेयरमैन का टिकट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रोहतक (हरियाणा)। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा के हलके गढ़ी सांपला-किलोई की एकमात्र नगर पालिका सांपला के चुनाव को लेकर सियासी सरगर्मी गरमा गई हैं। भाजपा ने चेयरमैन पद का टिकट कांग्रेस छोड़कर आए प्रवीण कोच को दिया है, जो पहले भी नपा के चेयरमैन रह चुके हैं।

साथ ही 16 में से 15 वार्ड प्रत्याशियों का टिकट घोषित कर दिया है। इसमें छह महिलाओं को टिकट दिया गया है। केवल वार्ड 12 का टिकट घोषित होना बाकी है। भाजपा के चेयरमैन पद के उम्मीदवार प्रवीण कोच ने बताया कि वे शुक्रवार को अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। उनके नामांकन पत्र दाखिल करने में पार्टी के वरिष्ठ नेता भी शामिल होने की चर्चा है। बता दें कि प्रवीण कोच कांग्रेस में रह चुके हैं। उन्होंने 8 में सांपला नगर पालिका में पार्षद का चुनाव लड़ा था। पार्षदों के सहयोग से वह पहली बार चेयरमैन बने थे। हाल में प्रवीण ने बीजेपी ज्वाइन की थी। पार्टी ने प्रवीण कोच पर जीत का भरोसा जताया है। वहीं पार्टी के कई कार्यकर्ता टिकट के लिए चुनाव मैदान में थे। अब देखना ये होगा कि वे पार्टी के चेयरमैन पद के बाकी दावेदार कोच का कितना साथ देंगे।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

महिला आरक्षण पर कोई धरना प्रदर्शन नहीं करना : मायावती

बसपा अपने स्टैंड पर कायम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने कहा कि महिला आरक्षण के समर्थन के मामले में पार्टी का स्टैंड 15 अप्रैल वाला ही है। इसमें कोई भी बदलाव नहीं किया गया है। पार्टी की बैठकों में इस बारे में बताना है ताकि इस मुद्दे पर पार्टी के लोग गुमराह न हो सकें। उन्होंने आगाह किया कि पार्टी के अनुशासन के मुताबिक, इस मुद्दे पर कोई धरना-प्रदर्शन आदि नहीं करना है।

बसपा सुप्रीमो ने बुधवार को दिल्ली जाने से पहले सोशल मीडिया पर सभी जिलाध्यक्षों, पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के लिए जारी अपने संदेश में कहा कि बीती 31 मार्च को लखनऊ में हुई यूपी की प्रदेश स्तरीय बैठक में पार्टी संगठन तैयार करने, कैडर के जरिये पार्टी का जनाधार बढ़ाने, आर्थिक मजबूती देने तथा विधानसभा चुनाव की तैयारी से संबंधित जो दिशा-निर्देश दिए गए थे, उस पर पूरी ईमानदारी व निष्ठा से अमल करते रहना है। खासकर बैठकों में यूपी में बसपा के नेतृत्व में रही सरकार में प्रदेश के विकास व जनहित आदि में किए कार्यों के बारे में जरूर बताना है। यह भी बताना है कि यूपी में अब तक जितने भी एक्सप्रेसवे तथा नोएडा में एयरपोर्ट बना है, उसकी योजना बसपा सरकार में ही बनी थी। ऐसे अनेकों और भी जनहित के कार्य किए गए थे। तमाम काम पूरे हो जाते यदि उस समय केंद्र की कांग्रेस सरकार बसपा के प्रति अपनी जातिवादी मानसिकता के चलते रुकावटें पैदा नहीं करती।

महिला आरक्षण की आड़ में बड़ा सियासी खेल नाकाम

तमिलनाडु के बाद कर्नाटक का मोदी सरकार पर हमला

परिसीमन को लेकर दोनों सीएम हैं मुखर

» मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का तमिलनाडु के सीएम स्टालिन को मिला साथ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। महिला आरक्षण अधिनियम व परिसीमन को लेकर तमिलनाडु की तरह कर्नाटक भी मुखर है। वहां के सीएम व डिप्टी सीएम दोनों भाजपा पर अपना प्रहार जारी रखे हुए है। उधर भाजपा विधायक की हत्या में आरोपी कांग्रेस नेता को लेकर भी सियासी बवाल जारी है। एक तरह से देखा जाए तो तमिलनाडु के सीएम स्टालिन को मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का समर्थन मिल गया है।

कर्नाटक के सीएम ने पीएम मोदी पर सामाजिक न्याय के विरोधी होने का आरोप लगाते हुए महिला आरक्षण अधिनियम को तत्काल लागू करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार जनगणना और परिसीमन की आड़ में इसे लागू करने में देरी कर रही है और कांग्रेस हमेशा से महिलाओं के प्रतिनिधित्व की पक्षधर रही है। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कांग्रेस पर भाजपा द्वारा लगाए गए आरोपों का जवाब देते हुए कहा कि मोदी सरकार को 23 में पारित महिला आरक्षण अधिनियम को तुरंत लागू कर देना चाहिए था। उन्होंने कहा कि कांग्रेस हमेशा से निर्वाचित निकायों में महिलाओं के अधिक प्रतिनिधित्व के पक्षधर रही है और कांग्रेस सरकार ने ही संविधान में 73वां और 74वां संशोधन किया था, जिसके परिणामस्वरूप पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू हुआ। कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने केंद्र के प्रस्तावित परिसीमन और लोकसभा सीटों को 850 तक बढ़ाने की योजना का कड़ा विरोध करते हुए इसे दक्षिणी राज्यों को राजनीतिक रूप से हाशिए पर धकेलने की साजिश बताया है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह कदम जनसंख्या नियंत्रण जैसे प्रगतिशील उपायों के लिए दक्षिण को दंडित करेगा, जिससे संसद में उनकी आवाज कमजोर हो जाएगी।

राजनीतिक पुनर्गठन करके संसद में दक्षिण की आवाज कमजोर करने की साजिश : डीके शिवकुमार

कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाकर 850 करने और 2026 से पहले की जनगणना के आधार पर परिसीमन करने के कथित प्रस्ताव से दक्षिणी राज्यों का प्रतिनिधित्व व्यवस्थित रूप से कम हो जाएगा। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में आरोप लगाया कि यह कदम राजनीतिक पुनर्गठन के समान है, जिससे संसद में दक्षिण की आवाज कमजोर हो सकती है, जबकि अधिक जनसंख्या वृद्धि वाले राज्यों को असमान रूप से लाभ होगा। उन्होंने इसे प्रगति और सुशासन को दंडित करना बताया और कहा कि दक्षिणी राज्य राजनीतिक रूप से हाशिए पर चले जाएंगे। शिवकुमार ने स्पष्ट किया कि कांग्रेस पार्टी विधानमंडल

में महिलाओं के लिए आरक्षण का समर्थन करती है और इस पहल का श्रेय पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के नेतृत्व को देती है। हालांकि, उन्होंने महिला आरक्षण अधिनियम के कार्यान्वयन को परिसीमन या सीटों के विस्तार से जोड़ने का विरोध करते हुए इसे अत्यंत अनुचित राजनीतिक एजेंडा बताया। उन्होंने प्रस्तावित परिवर्तनों के समय और पारदर्शिता पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में इतने बड़े पैमाने पर पुनर्गठन को जल्दबाजी में या व्यापक परामर्श के बिना लागू नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र को इस एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए महिला सशक्तिकरण की आड़ नहीं लेनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि इस तरह से आगे बढ़ने का कोई भी प्रयास अस्वीकार्य होगा। शिवकुमार ने यह भी कहा कि दक्षिणी राज्य संघवाद की भावना की रक्षा करने और प्रतिनिधित्व में निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए एकजुट रहेंगे। नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान करता है और यह परिसीमन प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है।

'पीएम मोदी सामाजिक न्याय के पक्षधर नहीं'

सिद्धारमैया ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी सामाजिक न्याय के पक्षधर नहीं हैं। उन्होंने पूछा कि महिला आरक्षण विधेयक 2023 में पारित हुआ था, इसे लागू किया जाना चाहिए था, इंतजार करने की क्या जरूरत थी? उन्होंने प्रधानमंत्री के इस आरोप को खारिज कर दिया कि कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने 11 की जनगणना के आधार पर परिसीमन से जुड़े महिला आरक्षण संशोधन विधेयक के खिलाफ मतदान करके भ्रूणहत्या की है। सिद्धारमैया ने आरोप लगाया कि

प्रधानमंत्री का रवैया भेदभावपूर्ण है और वे सामाजिक न्याय के पक्षधर नहीं हैं। विपक्षी नेताओं ने दावा किया कि सरकार 2011 की जनगणना के आधार पर परिसीमन करना चाहती है क्योंकि वह जातिगत आंकड़ों को ध्यान में नहीं रखना चाहती। सरकार ने इन आरोपों को खारिज कर दिया है। उन्होंने पूछा कि केंद्र में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार के लगभग 12 वर्षों के शासनकाल में प्रधानमंत्री मोदी ने विधानसभाओं में महिला आरक्षण क्यों लागू नहीं किया? उन्होंने कहा कि इसे अभी भी 2023 के अधिनियम के अनुसार लागू किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि जनगणना के बाद निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन करना उचित होगा।

हत्या की साजिश के पीछे राजनीतिक रंजिश

केस अपने हाथ में लेने के बाद, सीबीआई ने 2020 में एक सप्लीमेंट्री चार्जशीट दायर की, जिसमें कुलकर्णी को मुख्य साजिशकर्ता बताया गया। जाँचकर्ताओं ने आरोप लगाया कि वह गौडर को एक उभरता हुआ राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी मानता था, और इसलिए उसे रास्ते से हटाने के लिए उसने सुपारी किलर का इंतजाम किया। चल रही जाँच के तहत, उसी साल बाद में कुलकर्णी को गिरफ्तार कर लिया गया। अगस्त 2021 में, कुलकर्णी को भारत के सुप्रीम कोर्ट से इस शर्त पर जमानत मिल गई कि वह धारवाड़ जिले से दूर रहेगा। हालाँकि, जून 25 में, गवाहों को प्रभावित करने की कोशिशों के आरोपों के बाद, सुप्रीम कोर्ट ने उसकी जमानत रद्द कर दी। जनवरी 2026 में जमानत के लिए उसकी अगली अर्जी को हाई कोर्ट ने न्यायिक औचित्य का हवाला देते हुए खारिज कर दिया। 27 फरवरी को, सुप्रीम कोर्ट ने उसे फिर से जमानत दे दी, यह देखते हुए कि तब तक सभी गवाहों से पूछताछ हो चुकी थी।

दक्षिण भारत के राज्यों के लिए अन्याय नहीं सहेंगे

महिला आरक्षण संशोधन विधेयक से जुड़े परिसीमन विधेयक का ज़िक्र करते हुए, जिसका पिछले सप्ताह लोकसभा में विपक्षी दलों ने कड़ा विरोध किया था, उन्होंने कहा कि लोकसभा सीटों में 50 प्रतिशत की वृद्धि का प्रस्ताव है, जो दक्षिण भारत के राज्यों के लिए अन्यायपूर्ण होगा। उन्होंने कहा कि दक्षिण भारत के राज्यों ने जनसंख्या नियंत्रण में अच्छा काम किया है, जबकि उत्तर भारत के राज्यों ने नहीं। स्वाभाविक रूप से, यह उनके लिए फायदेमंद होगा और दक्षिण भारत के राज्यों के लिए नुकसानदायक। कांग्रेस नेता ने प्रधानमंत्री पर राजनीति करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि महिला आरक्षण और परिसीमन को एक साथ लाने की कोई जरूरत नहीं थी। उन्हें पता था कि उनके पास दो-तिहाई बहुमत नहीं है।

कांग्रेस विधायक ने की भाजपा विधायक की हत्या, आजीवन कारावास

बेंगलुरु की एक अदालत ने कांग्रेस विधायक विनय कुलकर्णी को, भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय नेता योगेशगौड़ा गौडर की सनसनीखेज हत्या के मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इस फैसले से कुलकर्णी पर कर्नाटक विधानसभा से अयोग्य घोषित होने का खतरा भी मंडरा रहा है। उनके साथ-साथ, अदालत ने इस मामले में दोषी पाए गए पंद्रह अन्य लोगों को भी आजीवन कारावास

की सजा दी। यह फैसला चुने हुए प्रतिनिधियों से जुड़े मामलों की स्पेशल कोर्ट के जज संतोष गजानन भट द्वारा कुलकर्णी और अन्य लोगों को कई धाराओं के तहत दोषी ठहराए जाने के दो दिन बाद आया। इन धाराओं में हत्या और आपराधिक साजिश के आरोप भी शामिल थे। सजा सुनाए जाने के दौरान, सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन ने कुलकर्णी के लिए बिना किसी छूट के आजीवन कारावास की सजा की मांग की, जबकि उनकी कानूनी टीम ने नरमी बरतने का अनुरोध किया। उन्होंने तर्क दिया कि कुलकर्णी का सार्वजनिक सेवा का लंबा रिकॉर्ड है और उनके परिवार के प्रति उनकी जिम्मेदारियां हैं। यह मामला 15 जून, 2016 का है, जब धारवाड़ के जिला पंचायत सदस्य गौडर की, सप्तपुर इलाके में उनके जिम के अंदर, भाड़े के हमलावरों द्वारा हत्या कर दी गई थी। उस समय कुलकर्णी कर्नाटक में मंत्री के पद पर थे। पीड़ित के परिवार और राजनीतिक हलकों से भारी दबाव के बाद, तत्कालीन राज्य सरकार ने 19 में इस मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

कई क्षेत्रों में महिलाओं को और भागीदारी मिले

आजकल महिला आरक्षण का शोर चारो ओर है। कुछ गलत प्रावधानों के चलते विपक्ष के विरोध एसका सविंधान संधोधन लोक सभा में गिर गया। इसमें जहां विपक्ष पर सत्ता पक्ष सवाल उठा रह है। उससे ज्यादा जिम्मेदारी उसकी भी है। जब 2023 में बिल पास हो चुका है तो इसकी जरूरत क्या थी। इसमें कोई दो राय नहीं कि महिलाओं का लोस, रास व विधान सभाओं में प्रतिनिधित्व बढ़ना चाहिए। पर उससे पहले देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां महिलाओं की संख्या कम है या नगण्य वहां भी सरकारों को ध्यान देना चाहिए। बतादे कोई भागीदारी तय करती है कि नीतियों में उनके ज्ञान और उनकी जरूरतें शामिल रहें। जल जीवन मिशन ने ग्राम जल व स्वच्छता समितियों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत प्रतिनिधित्व अनिवार्य बनाया है। जल गुणवत्ता जांच के लिए जल सखियों का प्रशिक्षण सामुदायिक स्तर पर उनकी तकनीकी क्षमता को मजबूत बना रहा है। इन प्रयासों का गहरा व स्थायी सामाजिक-आर्थिक प्रभाव सुनिश्चित करना अब भी एक चुनौती है, जिसे दूर करने की जरूरत है।

जल शासन को जब महिलाएं आकार देती हैं, तो जल सुरक्षा बढ़ती है, आजीविकाएं लचीली बनती हैं और समुदायों को जलवायु परिवर्तन के लिए बेहतर रूप से तैयार होने में मदद मिलती है। जल और लैंगिक समानता आपस में गहराई से जुड़े विषय हैं। महिलाएं प्रतिदिन घरों, खेतों और समुदायों में जल का इंतजाम तो करती हैं, लेकिन जल शासन (वाटर गवर्नेंस)) में उनकी भागीदारी बहुत सीमित बनी हुई है, जिसके गंभीर परिणाम सामने आ रहे हैं। देश के कई हिस्सों में महिलाओं को प्रतिदिन औसतन 35 मिनट सिर्फ पानी लाने में खर्च करना पड़ता है, जो उनकी शिक्षा, आजीविका, स्वास्थ्य और खुशहाली को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इतना ही नहीं, जलवायु परिवर्तन का जोखिम देश के आधे से अधिक जिलों को अत्यधिक जल समस्याओं (वाटर स्ट्रेस) के प्रति संवेदनशील बना रहा है। इस दिशा में केंद्र सरकार की जल जीवन मिशन जैसी प्रमुख योजना एक निर्णायक बदलाव ला रही है। पिछले पांच वर्षों में ग्रामीण नल कनेक्शन 17 प्रतिशत से बढ़कर 79 प्रतिशत (24) हो गए हैं, जिससे 15.2 करोड़ घरों तक जल पहुंच रहा है। जल की सहज उपलब्धता महिलाओं और लड़कियों के लिए पूरे वर्ष में 27 दिनों के अतिरिक्त समय की बचत कर रही है, जिससे उनकी आर्थिक भागीदारी बढ़ रही है। गुजरात की मुख्यमंत्री महिला पानी समिति प्रोत्साहन योजना इसका बेहतरीन उदाहरण है।

“ इसमें कोई दो राय नहीं कि महिलाओं लोस, रास व विधान सभाओं में प्रतिनिधित्व बढ़ना चाहिए। पर उससे पहले देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां महिलाओं की संख्या कम है या नगण्य वहां भी सरकारों को ध्यान देना चाहिए। बतादे कोई भागीदारी तय करती है कि नीतियों में उनके ज्ञान और उनकी जरूरतें शामिल रहें।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

संवादहीनता के चलते महिला आरक्षण पर गतिरोध

ज्योति मल्होत्रा

भारतीय राजनीति में 'महिला वोट बैंक' बनाने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उल्लेखनीय परियोजना, जिसके जरिए वे जाति और वर्ग, दोनों की राजनीति को पछाड़ने की उम्मीद रखे हुए हैं, पिछले 12 सालों में वह कल्पनातीत रूप से काफी कारगर रही है। मोदी ने हाल के दिनों में किसी भी दूसरे पुरुष नेता से ज्यादा महिलाओं की शिकायतें सुनने का प्रयास किया है- शुरुआत गांव के छोटे घरों में इस्तेमाल होने वाले, धुआं पैदा करने वाले चूल्हों को 'उज्ज्वला' स्कीम के तहत गैस सिलेंडर से बदलने की मुहिम से हुई, और फिर उनके बैंक खाते में पैसे डाले गए, खासकर उनके राज्यों में चुनावों से पहले।

तो फिर, महिला आरक्षण बिल, जिसे पेश करने की अगुवाई प्रधानमंत्री ने लोकसभा में की, यहां तक कि कुछ राज्यों में जारी चुनाव प्रचार के बीच में संसद का विशेष सत्र बुलाया, वह स्वीकृत क्यों नहीं हो पाया? क्या भारत की महिलाएं राष्ट्रीय 'नारी शक्ति' का हिस्सा नहीं बनना चाहतीं? इसका जवाब जटिल है, जाहिर है, शुरुआत इस तथ्य से होगी कि देवियों में हमारी गहरी आस्था के बावजूद, दुर्गा से लेकर काली, सरस्वती और लक्ष्मी और भी बहुत सारी, आप पूछ सकते हैं कि भारत में पुरुष-प्रधान समाज की जड़ें इतनी गहरी क्यों हैं। अवश्य ही, हम महिलाएं ही उन जड़ों को सींचने और अपना ही नुकसान करने के लिए जिम्मेदार हैं। वरना हरियाणा में महिला-पुरुष अनुपात (879/1,000), पंजाब (895/1,000) व दिल्ली (868/1,000) न होता- मानें या न मानें, 1000 पुरुषों पर 818 महिलाओं के साथ चंडीगढ़ का आंकड़ा देशभर में सबसे नीचे है, राष्ट्रीय सूची में ये सब नीचे क्यों है? (हालांकि हरियाणा का दावा है कि पिछले साल उसका आंकड़ा बढ़कर प्रति 1,000 पुरुषों पर 914 महिलाएं हो गया है। सवाल उठता है कि केरल के बराबर आबादी वाला पंजाब, दोनों की आबादी लगभग 3 करोड़ है, लिंगानुपात के पैमाने पर देशभर में दूसरा सबसे खराब प्रदर्शन करने वाला राज्य क्यों है? केरल (1,084), तमिलनाडु (996), आंध्र प्रदेश और कर्नाटक (दोनों 993) जैसे दक्षिणी राज्यों का प्रदर्शन उत्तरी राज्यों की तुलना में इस पैमाने (और अन्य कई सामाजिक-आर्थिक मापदंडों पर भी) इतना बढ़िया क्यों है?

दूसरा सवाल पूछना बनता है कि विपक्षी दल महिला आरक्षण बिल के खिलाफ क्यों हैं? उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के लाए उस विधान का समर्थन क्यों नहीं किया, जिससे भारतीय राजनीति में उलटफेर होना तय है? क्या विपक्ष महिला विरोधी है? पिछले कुछ दशकों में महिला

आरक्षण कानून का सफर काफी लंबा रहा, जैसा कि मेरी सहयोगी सूर्या पिल्लई ने इस विषय पर कुछ दिन पहले बहुत बढ़िया लिखा था। सच तो यह है कि 8 में कांग्रेस नीत यूपीए ने ही संसद में महिला आरक्षण विधेयक राज्यसभा में पेश किया था, और सुनिश्चित किया कि 10 में पास हो जाए, राज्य सभा में भी, ताकि यह 'लैप्स' न हो (तय अवधि में पास होना अनिवार्य है, परंतु जब कोई कानून राज्यसभा में पास हो जाए, तब 'लैप्स' नहीं होता)। कांग्रेस को अहसास था कि महिला आरक्षण बिल पर उसकी अपनी यूपीए बंटी हुई है (आरजेडी नेता शरद यादव ने 'पर कटी महिलाएं' जैसा कटाक्ष किया था और समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम सिंह यादव ने तो यह तक कह डाला कि अगर संसद महिला आरक्षण कानून पास कर देगी तो यह उन महिलाओं के लिए दरवाजे खोल देगा 'जिन पर फब्ती कसी जाती और सीटियां बजती हैं', ये बिल पर आपसी मतभेद सर्वसम्मत थी- केवल दो सांसदों ने बिल के खिलाफ वोट दिया था- संसद में 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने के समर्थन में।

इस बार प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह और संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू और शेष वरिष्ठ भाजपा नेतृत्व को चाहिए था कि विपक्ष को बुलाकर महिला आरक्षण बिल पर उनका समर्थन मांगते। यह भी हो सकता था कि एक संयुक्त संसदीय समिति या कोई विशेष समिति, जिसमें सभी दलों के प्रतिनिधि होते, इस कानून की तमाम धाराओं पर बारीकी से बहस करते -मसलन, क्या इसमें अन्य पिछड़ी जातियों और दलित महिलाओं के लिए 'कोटे के अंदर कोटा' होगा?- और एक बार आम सहमति बन जाने के बाद, नया कानून और उसे लागू करने की रूपरेखा को सदन में रखा जाता। बदकिस्मती से, न तो आम सहमति बनानी चाही और न ही हासिल की जा सकी क्योंकि कोई संवाद नहीं हुआ।

हिमालयी पर्यावरण को तीर्थयात्रियों के दबाव से बचाएं

जयसिंह रावत

अक्षय तृतीया के शुभ मुहूर्त से उत्तराखंड की चारधाम यात्रा ग्रीष्मकाल के लिए शुरू हो चुकी है। देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु ऑनलाइन यात्रा के लिए पंजीकरण करा चुके हैं। सवाल अभी भी अनुत्तरित है कि हिमालय की अति संवेदनशील पर्यावरणीय स्थिति को देखते हुए आखिर कितने तीर्थयात्री बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री की यात्रा एक ही दिन में एक साथ कर सकते हैं। हरित प्राधिकरण यानी एनजीटी भी बार-बार उत्तराखंड सरकार पर जोर डाल रहा है कि वह चारों धामों की कैरीइंग कैपेसिटी (धारण क्षमता) का वैज्ञानिक अध्ययन करवाकर रिपोर्ट पेश करे ताकि कानूनन आगंतुकों की संख्या तय की जा सके। लेकिन होटल, ढाबा, पुजारियों और अन्य हितधारकों का इतना दबाव है कि उनकी नाराजगी से सीधे राजनीतिक संभावनाओं पर असर का जोखिम है।

इसी दबाव के चलते 2022 में यात्रियों की तय सीमा को 2023 में स्वयं ही समाप्त कर दिया गया। लेकिन अब एनजीटी व पर्यावरणवादी इस मुद्दे को उठा रहे हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार, पहले से ही बढ़ती प्राकृतिक आपदाओं के संकट से घिरे इस क्षेत्र पर त्रासदियों की संख्या और आवृत्तियों में वृद्धि होती जा रही है। हिमालय एशिया का जलस्तंभ होने के साथ ही उपमहाद्वीप का मौसम नियंत्रक भी है, इसलिये हिमालय के संकट को मात्र स्थानिक दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। पिछले 25 साल में उत्तराखंड स्थित चारों हिमालयी धामों में यात्रियों के साथ ही वाहनों की संख्या भी कई गुना बढ़ती जा रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, कुल यात्रियों की संख्या वर्ष 2025 में 51,09,848 तक पहुंच गई है। वहीं वाहनों की संख्या में भी अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। वाहनों से जो प्रदूषणकारी उत्सर्जन होता है, उसमें कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, फोटोकैमिकल ऑक्सीडेंट, वायु विष यानी बेंजीन, एल्डिहाइड, ब्यूटाडीन, सीसा, पार्टिकुलेट मैटर, हाइड्रोकार्बन व सल्फर के ऑक्साइड आदि शामिल होते हैं। पर्यावरणविदों के लिए एक और चिंता का विषय ब्लैक कार्बन है, जो कि जलवायु परिवर्तन करने के साथ ही ग्लेशियरों को भी पिघला रहा है।

एनजीटी ने उत्तराखंड सरकार को आगामी 21 जुलाई से पहले चारों धामों में भीड़ की दृष्टि से वहन क्षमता को लेकर वैज्ञानिक रिपोर्ट पेश करने का आदेश जारी किया है। वास्तव में हिमालयी क्षेत्र में भीड़ नियंत्रण की कवायद सदा से विवादों और दबावों के घेरे में रही है। राज्य सरकार ने 2022 में साहसिक निर्णय लेते हुए प्रतिदिन यात्रियों की संख्या निर्धारित की थी, जिसमें बद्रीनाथ के लिए 15 हजार और केदारनाथ के लिए 12 हजार जैसी सीमाएं तय थीं। इसे सुरक्षा की दिशा में मानक कदम माना गया था। लेकिन वर्ष 2023 आते-आते स्थानीय व्यावसायिक हितों और हितधारकों के आर्थिक दबाव के चलते यह सीमा हटा ली गई। होटल व्यवसायियों व परिवहन संचालकों की अल्पकालिक आर्थिक चिंताओं ने दीर्घकालिक सुरक्षा जोखिमों को पीछे धकेल दिया।

वाइल्ड लाइफ इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया और आईआईटी रुड़की के शोध इशारा करते हैं कि हिमालय के ऊंचे क्षेत्रों की अपनी एक भौतिक सीमा है। वैज्ञानिकों का मत है कि प्रत्येक धाम की भौगोलिक बनावट, ढलानों की स्थिरता और वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन भिन्न हैं। आईआईटी रुड़की के आपदा विशेषज्ञों के अनुसार, उच्च हिमालयी क्षेत्रों में अत्यधिक मानवीय गतिविधियों और भारी निर्माण कार्य से ढलानों की 'इंटरनल बाइंडिंग' कमजोर होती है, जिससे भूस्खलन का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। जब इन अस्थिर ढलानों पर वाहनों और लोगों का अतिरिक्त भार पड़ता है, तो यह किसी बड़े भूगर्भीय असंतुलन का ट्रिगर बन सकता है। भीड़ का प्रभाव केवल सड़कों पर जाम तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके वैज्ञानिक दुष्परिणाम कहीं अधिक गहरे हैं। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ हाइड्रोलॉजी के शोध बताते हैं कि अचानक बढ़ने वाली जनसंख्या से हिमालयी जल स्रोतों और स्प्रिंग्स (नौलेधारों) पर अत्यधिक दबाव पड़ता है, जिससे स्थानीय जल चक्र प्रभावित होता है। इसके अतिरिक्त, कचरा प्रबंधन चुनौती बनकर उभरा है। एक अनुमान के अनुसार, प्रत्येक यात्री द्वारा छोड़ा गया प्लास्टिक और जैविक कचरा संवेदनशील ग्लेशियरों के समीप एकत्र होकर वहां के तापमान और पारिस्थितिकी को प्रभावित कर रहा है।

कचरे का यह ढेर अंततः अलकनंदा और भागीरथी जैसी पवित्र नदियों की जल गुणवत्ता को प्रदूषित कर रहा है, जिसका प्रभाव पहाड़ों से लेकर गंगा के मैदानी इलाकों तक देखा जा सकता है। विश्व प्रसिद्ध भीड़ वैज्ञानिक डिर्क हेल्बिंग के अनुसार, जब किसी सीमित स्थान पर घनत्व चार व्यक्ति प्रति वर्ग मीटर से अधिक हो जाता है, तो वहां 'क्राउड टर्बुलेंस' की स्थिति पैदा होती है। ऐसे में व्यक्ति की अपनी गति समाप्त हो जाती है और वह भीड़ के दबाव में एक तरल पदार्थ की तरह बहने लगता है। चारधाम के संकरे मंदिर परिसरों और खड़ी चढ़ाई वाले रास्तों पर ऐसी स्थिति किसी भी क्षण भगदड़ या जनहानि का कारण बन सकती है। शासन और समाज के सामने सबसे बड़ी चुनौती इस धारणा को बदलने की है कि यात्रियों की संख्या सीमित करना आस्था पर प्रहार है। वास्तव में, यह आस्था को सुरक्षित करने का ही एक उपक्रम है। हिमालय की संवेदनशीलता को देखते हुए अब डिजिटल पंजीकरण, स्लॉट आधारित दर्शन और 'एंट्री-एग्जिट' नियंत्रण जैसे आधुनिक प्रबंधनों को बिना किसी राजनीतिक या व्यावसायिक दबाव के लागू करना होगा। स्थानीय समुदायों को भी यह समझना होगा कि यदि हिमालय सुरक्षित नहीं रहा, तो उनकी आजीविका का यह आधार ही सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

इन जगहों पर दिखता है सबसे खूबसूरत सूर्योदय-सूर्यास्त

भारत में प्राकृतिक सुंदरता की कोई कमी नहीं है। प्रकृति के सबसे सुंदर पलों में से एक है सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य। जब सूरज धीरे-धीरे आसमान में उगता है या शाम को क्षितिज में ढलता है, तो पूरा आसमान लाल, नारंगी और सुनहरे रंगों से भर जाता है। भारत में कई ऐसी जगहें हैं जहां यह नजारा इतना खूबसूरत होता है कि लोग इसे देखने के लिए दूर-दूर से आते हैं। अगर आप यात्रा के दौरान कुछ खास और यादगार पल देखना चाहते हैं, तो इन जगहों पर सूर्योदय और सूर्यास्त का नजारा जरूर देखें। यह अनुभव न सिर्फ आपकी यात्रा को खास बना देगा, बल्कि जीवनभर याद भी रहेगा। अगर आप भी प्रकृति प्रेमी हैं और ट्रैवल का शौक रखते हैं, तो भारत की इन जगहों पर सूर्योदय और सूर्यास्त का नजारा जरूर देखना चाहिए।

दार्जिलिंग

दार्जिलिंग में टाइगर हिल से सूर्योदय का नजारा दुनिया के सबसे खूबसूरत दृश्यों में से एक माना जाता है। जब सूरज की पहली किरणें कंचनजंगा की बर्फीली चोटियों पर पड़ती हैं, तो पूरा दृश्य सुनहरा हो जाता है।

ऊटी

ऊटी की पहाड़ियों से सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों का नजारा बेहद खूबसूरत दिखाई देता है। हरियाली से घिरी घाटियों के बीच से उगता और ढलता सूरज प्रकृति की अद्भुत सुंदरता को दर्शाता है।

लेह-लद्दाख

लद्दाख की पहाड़ियों में सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य बेहद खास होता है। यहां सूरज की रोशनी पहाड़ों और झीलों पर पड़कर अद्भुत रंग बिखेरती है, जो देखने वालों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

जैसलमेर

थार रेगिस्तान में सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए जैसलमेर एक शानदार जगह है। सुनहरी रेत के टीलों के बीच डूबता सूरज किसी फिल्मी दृश्य जैसा लगता है।

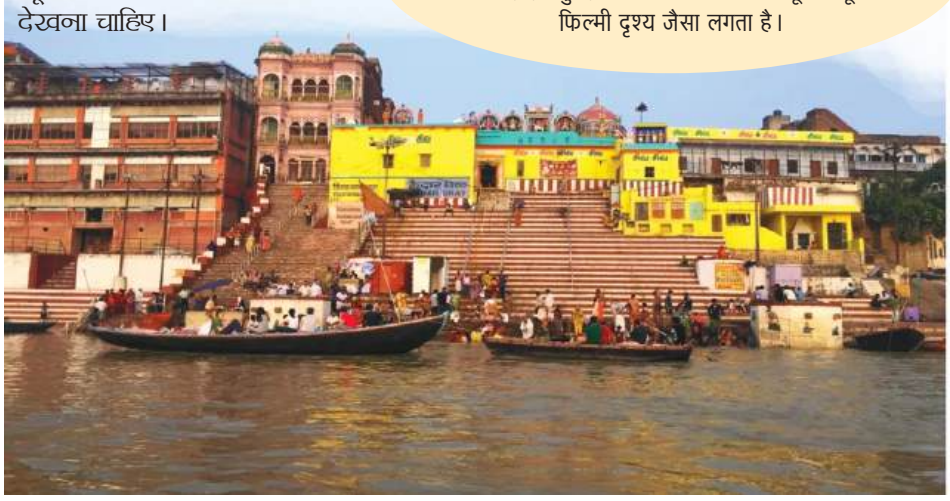

वाराणसी

उत्तर प्रदेश में वाराणसी के घाटों पर गंगा नदी के किनारे सूर्योदय देखना एक अनोखा अनुभव होता है। सुबह-सुबह गंगा के ऊपर उगते सूरज की रोशनी और मंदिरों की घंटियों की आवाज मिलकर एक आध्यात्मिक माहौल बना देती है।

माउंट आबू

राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन माउंट आबू भी सूर्यास्त के लिए काफी मशहूर है। यहां का सनसेट पॉइंट पर्यटकों के बीच बहुत लोकप्रिय है। पहाड़ों के बीच ढलते सूरज का दृश्य बेहद मनमोहक लगता है।

कन्याकुमारी

भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित कन्याकुमारी सूर्योदय और सूर्यास्त देखने के लिए सबसे प्रसिद्ध जगहों में से एक है। यहां तीन समुद्र अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर मिलते हैं। समुद्र के बीच से उगता सूरज और शाम को डूबता सूरज बेहद शानदार दिखाई देता है।

हंसना मना है

नरेश-घर में शासन कैसे चलाएं नामक पुस्तक से तुम्हें कुछ फायदा हुआ? महेन्द्र-कुछ नहीं। नरेश- क्यों? महेन्द्र-'पत्नी ने मुझें पुस्तक पढ़ने को कभी नहीं दी।

एक लेखक महोदय कोई सभा में भाषण दे रहे थे, बोले- अजीब इतफाक है कि जिस दिन प्रेमचंद जी का निधन हुआ, उसी दिन मेरा जन्म हुआ। देखा जाए तो वह दिन हिन्दी साहित्य के लिए बड़े दुर्भाग्य का दिन था' एक श्रोता ने अधूरा वाक्य पूरा किया।

'क्या हुआ मैडम, आपने ये स्वेटर आज तक पूरा नहीं किया? तुम तो एक स्वेटर 10 दिन में पूरा कर लेती थीं। 'बात ऐसी है कि मैं पांच-छः दिन आफिस नहीं जा सकी।

खरीदार-'भैंस की कीमत पांच हजार रुपये तो बहुत ज्यादा है। मालिक-'यह कैसे? खरीदार-'इसकी एक आंख जो नहीं है। मालिक-'आपको इससे दूध लेना है या कसीदाकारी करानी है।

जब नए साल पर पप्पू और फेंकू एक-दूसरे से मिले... पप्पू- यार आज बहुत ठंड है... फेंकू- हां यार ठंड तो है... पर कर भी क्या सकते हैं... पप्पू ने नए साल की बधाई देने के लिए फेंकू से हाथ मिलाया और काफी देर तक पकड़े रहा... फिर बोला, यार फेंकू थोड़ी देर और पकड़े रहो न तेरा हाथ बहुत गरम है अच्छा लगता है...

कहानी — सियार और जादुई ढोल

एक जंगल के पास दो राजाओं के बीच युद्ध हुआ। उस युद्ध में एक की जीत और दूसरे की हार हुई। युद्ध खत्म होने के एक दिन बाद तेज आंधी चली, जिस कारण युद्ध के दौरान बजाया जाने वाला ढोल लुढ़क कर जंगल में चला जाता है और एक पेड़ के पास जाकर अटक जाता है। जब भी तेज हवा चलती और पेड़ की टहनी ढोल पर पड़ती, तो ढमाढम-ढमाढम की आवाज आने लगती थी। एक सियार खाने की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था और अचानक उसकी नजर गाजर खा रहे खरगोश पर पड़ती है। सियार उसे शिकार बनाने के लिए सावधानी से आगे बढ़ता है। जब वह झपटा मारता है, तो खरगोश उसके मुंह में गाजर को फंसाकर भाग जाता है। सियार गाजर को मुंह से बाहर निकालकर आगे बढ़ता है, तो उसे ढोल की तेज आवाज सुनाई देती है। वह घबरा जाता है और सोचने लगता है कि उसने पहले कभी किसी जानवर की ऐसी आवाज नहीं सुनी। जहां से ढोल की आवाज आ रही थी, सियार उस ओर जाता है और यह जानने की कोशिश करता है कि जानवर उड़ने वाला है या चलने वाला। फिर वह ढोल के पास जाता है और उस पर हमला करने के लिए कूदता है, तो ढम की आवाज आती है, जिसे सुनकर सियार छलांग लगा कर उतर जाता है और पेड़ के पीछे छुपकर देखने लगता है। कुछ मिनट बाद किसी तरह की प्रतिक्रिया न होने पर वह फिर से ढोल पर हमला करता है और फिर से ढम की आवाज आती है और वह फिर से ढोल से कूदकर भागने लगता है, लेकिन इस बार वह वहीं पर रुककर मुड़कर देखता है। ढोल में किसी भी तरह की हलचल न होने पर वह समझ जाता है कि यह कोई जानवर नहीं है। फिर वह ढोल पर कूद-कूद कर ढोल को बजाने लगता है। इससे ढोल हिलने लगता है और लुढ़कने भी लगता है, जिससे सियार ढोल से गिर जाता है और ढोल बीच में से फट जाता है। ढोल के फटने पर उसमें से विभिन्न तरह के स्वादिष्ट भोजन निकलते हैं, जिसे खाकर सियार अपनी भूख को शांत करता है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। यात्रा मनोरंजक रहेगी। समय की अनुकूलता का लाभ लें। मित्रों के साथ अच्छा समय बीतेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें।

वृषभ रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। मनपसंद भोजन का आनंद मिलेगा। कारोबारी वृद्धि की योजना बनेगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। समय की अनुकूलता रहेगी।

मिथुन कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। काम में मन नहीं लगेगा। बाहर जाने की योजना बनेगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। परिवार के साथ समय मनोरंजन में व्यतीत होगा।

कर्क उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। किसी प्रभावशाली व्यक्ति का मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होगा। मान-सम्मान मिलेगा। मित्रों की सहायता करने का मौका मिलेगा।

सिंह उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। आत्मसम्मान बनेगा। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। नए मित्र बनेंगे। कोई बड़ा कार्य करने की इच्छा जागृत होगी।

कन्या नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति पर व्यय होगा। व्यापार लाभदायक रहेगा। कोई बड़ा कार्य होने से प्रसन्नता रहेगी। दूसरों के काम में दखल न दें। यात्रा मनोरंजक रहेगी।

तुला व्यापार ठीक चलेगा। यात्रा में विशेष सावधानी रखें। किसी भी व्यक्ति के उकसाने में न आएं। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। किसी मनोरंजक कार्यक्रम का हिस्सा बन सकते हैं।

वृश्चिक यात्रा मनोरंजक रहेगी। सामाजिक कार्य करने की इच्छा जागृत होगी। व्यापार ठीक चलेगा। परिवार के साथ समय सुखमय व्यतीत होगा। प्रसन्नता बनी रहेगी।

धनु योजना फलीभूत होगी। मनोरंजन होगा। कार्यस्थल पर परिवर्तन हो सकता है। मित्रों के साथ समय मनोरंजक बीतेगा। लेन-देन में जल्दबाजी न करें।

मकर लाभ के अवसर हाथ आएंगे। यात्रा मनोरंजक रहेगी। मनोरंजन के साधन प्राप्त होंगे। तीर्थदर्शन की योजना बनेगी। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी।

कुम्भ हल्की हंसी-मजाक न करें। विवाद हो सकता है। किसी व्यक्ति की नाराजी से मन खराब होगा। मित्रों तथा रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी।

मीन किसी प्रभावशाली व्यक्ति का मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होगा। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। मित्रों का सहयोग व साथ मिलेगा। भाइयों से मतभेद दूर होंगे।

जल्द ही नई फिल्म में राणा दग्गुबाती के साथ नजर आयेंगे अक्षय कुमार

अक्षय कुमार भूत बंगला की कामयाबी से खुश हैं। खबरें हैं कि वह जल्द ही एक बड़े बजट की हिस्टोरिकल थ्रिलर फिल्म में काम करने वाले हैं। उनके साथ साउथ के कलाकार राणा दग्गुबाती होंगे। इस प्रोजेक्ट को लेकर अभी से काफी चर्चा हो रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस फिल्म के निर्देशक चंदू मोंडेती होंगे।

123 तेलुगु के मुताबिक राणा दग्गुबाती एक महत्वाकांक्षी हिस्टोरिकल थ्रिलर फिल्म में लीड रोल निभाएंगे। इसकी कहानी उज्जैन के रहस्यमयी बैकग्राउंड पर आधारित होगी। इस फिल्म की कास्ट में अक्षय कुमार भी शामिल हो गए हैं।

मेकर्स ने एक बड़ा सरप्राइज भी छिपाकर रखा है। ऐसी अफवाहें हैं कि कोई टॉप हीरो इस फिल्म में कैमियो कर सकता है। हालांकि प्रोजेक्ट को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक एलान नहीं हुआ है। इस बड़े प्रोजेक्ट को करण जौहर का धर्मा प्रोडक्शंस सपोर्ट कर रहा है। इससे लगता है कि यह प्रोजेक्ट पैन-इंडिया लेवल का होगा। इस फिल्म को चंदू मोंडेती डायरेक्ट करेंगे। चंदू को कार्तिकेय 2 को निर्देशित करने के लिए जाना जाता है।

वह पुरानी पहेलियों और रहस्यों पर आधारित कहानियां बुनने के लिए जाने जाते हैं। अक्षय कुमार फिलहाल हॉरर कॉमेडी फिल्म भूत बंगला में नजर आ रहे हैं। इस फिल्म में तब्बू और वामिका गब्बी भी अहम किरदारों में हैं। बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म अच्छा प्रदर्शन कर रही है। वह जल्द ही फिल्म हैवान का भी हिस्सा होंगे। खबरें हैं कि राणा दग्गुबाती फिल्म जय हनुमान की कास्ट में शामिल हो गए हैं। हालांकि अभी तक इस बारे में कोई ऑफिशियल कन्फर्मेशन नहीं आई है। यह फिल्म, 2024 की ब्लॉकबस्टर फिल्म हनुमान का सीक्वल है।

धुरंधर के बाद अब सारा अर्जुन निभाएंगी मधुबाला की भूमिका

बॉलीवुड की दिग्गज अभिनेत्री मधुबाला पर लंबे समय से बायोपिक बनने को लेकर चर्चा चल रही है। अब खबर आ रही है कि इस प्रोजेक्ट में धुरंधर फेम सारा अर्जुन मधुबाला की भूमिका निभाएंगी। इस प्रोजेक्ट में पहले कई बार देरी हुई है, मगर अब फिल्म के आगे बढ़ने की संभावना है। खबर यह भी है कि सिनेमाघरों में रिलीज होने के बजाय, यह फिल्म सीधे ओटीटी पर रिलीज होगी।

वैरायटी इंडिया के मुताबिक अपकमिंग फिल्म का प्रोडक्शन जुलाई 2026 से शुरू होने वाला है। यह फिल्म पहले कुछ आर्थिक दिक्कतों की वजह से टल गई थी। अब संजय लीला भंसाली एक प्रोड्यूसर के तौर पर इस प्रोजेक्ट से जुड़े हैं। उम्मीद है कि यह प्रोजेक्ट बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ेगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सारा अर्जुन ने इस फिल्म के लिए अपने लुक में बदलाव किए हैं। उन्होंने मधुबाला के रोल के लिए काम करना शुरू कर दिया है। दूसरी तरफ, दिलीप कुमार और किशोर कुमार जैसे दूसरे किरदारों के लिए कास्टिंग जारी है।

दिलचस्प बात यह है कि फिल्म में पहले कियारा आडवाणी को लीड रोल के लिए जा रहा था। सारा से पहले जिन दूसरी एक्ट्रेस को यह रोल ऑफर किया गया था, उनमें कल्याणी प्रियदर्शन, शरवरी और अनीत पड्डा भी शामिल थीं। हालांकि, एक्ट्रेस या मेकर्स की तरफ से अभी तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है।

यह अनटाइटल्ड फिल्म इंडस्ट्री में मधुबाला के शानदार करियर के साथ-साथ उनकी पर्सनल लाइफ और मुश्किलों को भी दिखाने की कोशिश करेगी। दिलीप कुमार के साथ उनके रिश्ते से लेकर म्यूजिशियन किशोर कुमार के साथ उनकी शादी तक, यह फिल्म मधुबाला की जिंदगी के सभी उतार-चढ़ाव को दिखाएगी।

बॉलीवुड | मन की बात

मैं बड़े पर्दे को कभी नहीं छोड़ूंगी : करिश्मा कपूर

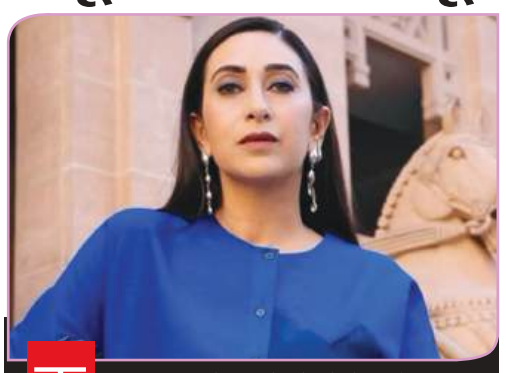

करिश्मा कपूर लंबे वक्त से बड़े पर्दे से दूर हैं। हालांकि, उनका कहना है कि वो अब समय को ज्यादा महत्व देती हैं और चुनिंदा प्रोजेक्ट्स पर ही काम करना चाहती हैं। हाल ही में अभिनेत्री ने अपने करियर और काम के प्रति अपने जुनून को लेकर बात की। उन्होंने बताया कि अब वो किस तरह के प्रोजेक्ट्स करना चाहती हैं। साथ ही एक्ट्रेस ने अपने समय के दौर को भी याद किया। करिश्मा कपूर ने दशकों से इंडस्ट्री को करीब से देखने की बात कही। उन्होंने कहा कि आज काम जुनून और उद्देश्य से जुड़ा है। मैं इंडस्ट्री में पली-बढ़ी हूं और मुझे कमर्शियल ब्लॉकबस्टर से लेकर एक्सपेरिमेंटल फिल्मों तक, हर तरह की भूमिकाएं निभाने का सौभाग्य मिला है। अब हर जगह मौजूद रहने के बजाय मैं उन प्रोजेक्ट्स को चुनती हूं जो मेरे दिल को छूते हैं। अभिनेत्री स्वीकार करती हैं कि अब समय उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण हो गया है। उन्होंने कहा कि पहले लगातार काम करने और एक सेट से दूसरे सेट पर जाने की वजह से काफी भागदौड़ रहती थी। अब मैं समय को ज्यादा महत्व देती हूं। मैं सोच-समझकर प्रोजेक्ट चुनती हूं क्योंकि मैं चाहती हूं कि हर प्रोजेक्ट के लिए समय निकालना सार्थक हो और साथ ही परिवार को भी पर्याप्त समय मिल सके। स्क्रिप्ट तो जरूरी है ही, लेकिन साथ ही लोग और कहानी के पीछे का मकसद भी मायने रखता है। अभिनेत्री ने आगे कहा कि बड़े पर्दे का अपना ही जादू है, यहीं से मैंने शुरुआत की थी और यह हमेशा मेरे दिल में एक खास जगह रखेगा। लेकिन मुझे यह भी पसंद है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म के साथ कहानी कहने का तरीका कैसे विकसित हुआ है। वेब मुश्किल कहानियों और अलग-अलग तरह के किरदारों के लिए मौका देता है। मेरे जैसी किसी के लिए जो आगे क्या करना है, इस बारे में सोच-समझकर फैसला लेती है यह एक बेहतरीन क्षेत्र है। हालांकि, मैं बड़े पर्दे को कभी नहीं छोड़ूंगी।

हवन की हर आहुति के साथ क्यों बोलते हैं 'स्वाहा'? नहीं जानते तो यहां जानें

भारतीय परंपरा में हवन और यज्ञ का विशेष महत्व माना जाता है। पूजा-पाठ के दौरान जब भी अग्नि में आहुति दी जाती है, तो स्वाहा शब्द का उच्चारण किया जाता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इस शब्द का असली अर्थ क्या है और इसे क्यों बोला जाता है? हाल ही में सोशल मीडिया पर इसका आसान शब्दों में गहरा अर्थ समझाया गया है।

स्वाहा जो है वो अग्नि देव की पत्नी है, जिस भी भगवान को ये अर्पित कर रहे हैं। देवी स्वाहा वो भोजन ले जाकर उन भगवान तक पहुंचाती हैं इसलिए हम बार-बार स्वाहा कहते हैं। महिला के अनुसार, स्वाहा केवल एक शब्द नहीं, बल्कि समर्पण की भावना का प्रतीक है। स्वाहा जो हैं वो अग्नि देव की पत्नी हैं, जो भी चीज भगवान को अर्पित करते हैं। देवी स्वाहा वो ले जाकर उसे भगवान तक पहुंचाती हैं इसलिए हम बार-बार स्वाहा कहते हैं। यानी जब हम हवन में किसी वस्तु जैसे घी, लकड़ी या हवन सामग्री को अग्नि में अर्पित करते हैं और स्वाहा कहते हैं, तो उसका अर्थ होता है कि हम उस आहुति को पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ ईश्वर को समर्पित कर रहे हैं। यह एक तरह से अपने अहंकार, इच्छाओं और नकारात्मकता को भी अग्नि में अर्पित करने का संकेत देता है। स्वाहा बोलते समय मन में शुद्ध भाव और सकारात्मक सोच होना बेहद जरूरी है। केवल शब्द बोलने से ही नहीं, बल्कि उसके पीछे की भावना से ही पूजा का वास्तविक फल मिलता है। अगर मन में सच्ची श्रद्धा हो, तो हवन का आध्यात्मिक प्रभाव और भी गहरा हो जाता है। आज के दौर में जहां लोग परंपराओं को सिर्फ एक रस्म मानकर निभाते हैं, वहीं इस तरह की वायरल चीजें हमें पुरानी चीजों से जोड़े रखती हैं। साथ ही पुरानी चीजों की असली भावना को समझने में मदद करती है। स्वाहा का अर्थ जानने के बाद हवन की प्रक्रिया केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धि और समर्पण का माध्यम बन जाती है।

अजब-गजब | यह सुनने में अजीब, लेकिन है दिलचस्प जैविक प्रक्रिया

दुनिया का सबसे अनोखा जीव! जो भोजन निगलने के लिए करता है आंखों का इस्तेमाल

दुनिया में कई अनोखे जीव पाए जाते हैं, लेकिन मेंढक का तरीका सबसे अलग माना जाता है। यह ऐसा जीव है जो अपने भोजन को निगलने में आंखों की भी मदद लेता है। सुनने में यह अजीब जरूर लगता है, लेकिन इसके पीछे एक दिलचस्प जैविक प्रक्रिया काम करती है, जिसे विज्ञान में एक खास तरह का एडॉप्टेशन माना जाता है।

दरअसल, मेंढक अपने शिकार को चबा नहीं सकता। वह कीड़े-मकोड़े या छोटे जीवों को सीधे निगलता है। जब वह किसी बड़े शिकार को पकड़ता है, तो निगलते समय उसकी आंखें अंदर की ओर धंस जाती हैं। यह कोई संयोग नहीं, बल्कि एक खास तकनीक है, जो भोजन को गले तक पहुंचाने में मदद करती है। जब मेंढक अपनी आंखों को नीचे की ओर दबाता है, तो वे मुंह के अंदर की तरफ हल्का दबाव बनाती हैं। यह दबाव शिकार को धीरे-धीरे ग्रासनली (गले) की ओर धकेलने में मदद करता है। यानी उसकी आंखें एक तरह से 'पुश' देने का काम करती हैं। मेंढक के सिर के ऊपरी हिस्से और आंखों के बीच सख्त हड्डी नहीं होती है। वहां लचीले ऊतक मौजूद होते हैं, जिससे आंखें आसानी से अंदर की ओर जा सकती हैं। यही वजह है

कि यह प्रक्रिया संभव हो पाती है।

मेंढक की जीभ आगे की तरफ जुड़ी होती है, जिससे वह तेजी से बाहर निकलकर शिकार पकड़ लेती है। हालांकि, यह जीभ शिकार को अंदर धकेलने में ज्यादा मददगार नहीं होती। इसलिए निगलने के दौरान आंखों की भूमिका और बढ़ जाती है। मेंढक के पास भोजन को चबाने की क्षमता बहुत कम होती है। वह अपने शिकार को पूरा का पूरा निगल जाता है। उसकी उभरी हुई आंखें न सिर्फ उसे चारों ओर देखने में मदद करती हैं, बल्कि निगलने की प्रक्रिया में भी अहम योगदान देती हैं। इस तरह, मेंढक का आंखों से निगलना केवल एक मजेदार तथ्य नहीं, बल्कि प्रकृति की एक अनोखी और समझदारी भरी रचना का उदाहरण है।

एमसीडी में भाजपा की विफलताओं को उजागर करेगी आप

पार्टी का दिल्ली मेयर चुनाव नहीं लड़ने का फैसला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली मेयर चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया है, क्योंकि भाजपा के पास एमसीडी में स्पष्ट बहुमत है। आप के अनुसार, यह कदम भाजपा को सत्ता में लाकर उसकी विफलताओं को उजागर करने की एक रणनीतिक चाल है।आम आदमी पार्टी (आप) ने बुधवार को नामांकन बंद होने से एक दिन पहले घोषणा की कि वह दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के महापौर चुनाव नहीं लड़ेगी।

250 सदस्यीय एमसीडी विधानसभा में भाजपा के पास 123 पार्षदों का आरामदायक बहुमत है। आम आदमी पार्टी के 101 पार्षद हैं और शेष में इंद्रप्रस्थ विकास पार्टी, कांग्रेस और निर्दलीय पार्षद शामिल हैं। दिल्ली आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने एक बयान में कहा कि पार्टी ने महापौर चुनाव में भाग न लेने का फैसला किया है। पार्टी ने पिछले साल भी महापौर और उप महापौर पदों के लिए चुनाव नहीं लड़ा था। भारद्वाज ने कहा कि चुनाव में भाग न लेकर आम आदमी पार्टी यह सुनिश्चित करेगी कि भाजपा एमसीडी में सत्ता में आए और अपनी नाकामियों के जरिए बेनकाब हो जाए। आम आदमी पार्टी के नेता ने दावा किया कि सभी स्तरों पर सत्ता में होने के बावजूद भाजपा दिल्ली में कोई बदलाव लाने में नाकाम रही है। भाजपा को काम करना नहीं आता। सिर्फ आम आदमी पार्टी ही काम करना जानती है। केंद्र और दिल्ली दोनों में भाजपा सत्ता में है, साथ ही एमसीडी पर भी उसका नियंत्रण है।

29 अप्रैल को होंगे चुनाव

महापौर, उप महापौर और इसकी स्थायी समिति के तीन सदस्यों के पदों के लिए चुनाव 29 अप्रैल को होंगे। पार्षदों के नामांकन की प्रक्रिया 23 अप्रैल को शाम 5 बजे समाप्त हो जाएगी। वहीं, गुजरात के पंचमहल जिले में पुलिस ने गोधरा नगरपालिका चुनाव में आम आदमी पार्टी (आप) के एक उम्मीदवार और पार्टी के दो कार्यकर्ताओं से जुड़े कथित हवाला लेनदेन की जांच शुरू की है। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। यह जांच 26 अप्रैल को होने वाले स्थानीय निकाय चुनाव से पहले शुरू हुई है।

केजरीवाल को याद कर रही है दिल्ली की जनता : भरद्वाज

भारद्वाज ने यह भी कहा कि दिल्ली की जनता अब पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को याद कर रही है और मानती है कि राजधानी को प्रभावी ढंग से वही चला सकते हैं। बारिश और जलभराव के मुद्दे पर भाजपा को घेरते हुए उन्होंने कहा कि पिछले साल राजधानी के कई इलाकों में गंभीर जलभराव हुआ था, जबकि सभी एजेंसियां भाजपा के नियंत्रण में थीं। इस बार भी आप चाहती है कि भाजपा का ही मेयर बने, ताकि मानसून के दौरान यदि हालात बिगड़ते हैं तो उसके पास कोई बहाना न बचे। उन्होंने दावा किया कि बीते एक साल में केंद्र, एलजी, मुख्यमंत्री, मेयर और स्टैंडिंग कमेटी जैसे सभी प्रमुख संस्थानों पर नियंत्रण होने के बावजूद भाजपा दिल्ली में बदलाव लाने में विफल रही है। उन्होंने बताया कि स्टैंडिंग कमेटी के सदस्यों के चुनाव में आम आदमी पार्टी शालीमार बाग वार्ड से पार्षद जलज चौधरी को अपना उम्मीदवार बनाया है। उन्होंने नामांकन पत्र भी दाखिल कर दिया है।

पप्पू यादव पागल हो गए हैं: अनंत सिंह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने यह कहकर राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया है कि 90 प्रतिशत महिलाएं किसी पुरुष राजनेता से समझौता किए बिना राजनीति में नहीं आ सकतीं। इस बयान पर जेडीयू विधायक अनंत सिंह ने उन्हें पागल बताते हुए पलटवार किया, जबकि बिहार महिला आयोग ने स्वत: संज्ञान लेते हुए उनकी लोकसभा सदस्यता रद्द करने की चेतावनी दी है।

स्वतंत्र सांसद पप्पू यादव ने उस टिप्पणी के बाद बवाल खड़ा कर दिया है कि अधिकांश महिलाएं किसी पुरुष राजनेता के कमरे में कुछ समय बिताए बिना राजनीति में नहीं आ सकतीं। अब इसको लेकर सियासी बवाल मचा हुआ है। पप्पू यादव का बयान, जेडीयू विधायक अनंत कुमार सिंह ने भी पलटवार किया है। अनंत सिंह ने कहा कि पप्पू यादव पागल हो गए हैं। उनकी अपनी पत्नी कहाँ हैं? उनकी अपनी पत्नी भी एक नेता हैं, उन्हें किसी और के बारे में बोलने से पहले उनसे भी पूछना चाहिए। आपको बता दें कि पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने राजनीति में महिलाओं पर विवादास्पद टिप्पणी करके राजनीतिक बवाल खड़ा कर दिया है। उन्होंने दावा किया कि महिलाएं समझौता किए बिना राजनीति में सफल नहीं हो सकतीं और आरोप लगाया कि उनकी सुरक्षा और संरक्षा की अनदेखी की जा रही है। पप्पू यादव ने कहा कि भारत में महिलाओं को देवी कहा जाता है, लेकिन यहां उन्हें कभी सम्मान नहीं मिलेगा। इसके लिए व्यवस्था और समाज दोनों जिम्मेदार हैं। 90त्न महिलाएं राजनेताओं के कमरे में प्रवेश किए बिना राजनीति नहीं कर सकतीं।

इकाना में लखनऊ की लगातार सातवीं हार

» गेंदबाजों की मेहनत पर बल्लेबाजों ने फेरा पानी राजस्थान ने 40 रनों से हराया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। जोफ्रा आर्चर की अगुवाई में गेंदबाजों के घातक प्रदर्शन के दम पर राजस्थान रॉयल्स ने लखनऊ सुपर जाएंट्स को 40 रनों से हरा दिया। इकाना स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी राजस्थान ने रवींद्र जडेजा की नाबाद 43 रनों की पारी की मदद से 20 ओवर में छह विकेट पर 159 रन बनाए। जवाब में लखनऊ की टीम 18 ओवर में 10 विकेट पर 119 रन ही बना सकी। उनके लिए मिचेल मार्श ने सर्वाधिक 55 रनों की पारी खेली। घरेलू मैदान पर यह लखनऊ की आईपीएल में लगातार सातवीं हार है। इस मामले में टीम ने डेक्कन चार्जर्स और पुणे वॉरियर्स की बराबरी कर ली।

वहीं, इस मामले में शीर्ष पर दिल्ली कैपिटल्स है, जिन्होंने दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में लगातार नौ मुकाबले गंवाए। लखनऊ के खिलाफ जीत के साथ राजस्थान रॉयल्स ने अंक तालिका में छलांग लगाकर दूसरा स्थान हासिल कर लिया। सात में से पांच मैच जीत चुकी राजस्थान के खाते में 10 अंक हो गए हैं। वहीं, लखनऊ सात में से पांच मुकाबले हारकर नौवें स्थान पर बनी हुई है। शीर्ष पर फिलहाल पंजाब किंग्स का दबदबा है, जो अब तक इस टूर्नामेंट में अजेय है। आरसीबी और सनराइजर्स हैदराबाद आठ-आठ अंकों के साथ क्रमश: तीसरे और चौथे पायगान पर हैं। 160 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी लखनऊ की शुरुआत खराब हुई। महज 11 के स्कोर पर टीम ने तीन विकेट गंवा दिए। मिचेल मार्श ने निकोलस पूरन के साथ चौथे विकेट के लिए 43 रन की साझेदारी करते हुए टीम को संभालने की कोशिश की। लेकिन मार्श के आउट होते ही लखनऊ का संघर्ष खत्म हो गया और टीम आलआउट हो गयी।

वानखेड़े में मुंबई का चेन्नई से मुकाबला आज

वानखेड़े। आईपीएल 2026 के 33वें मुकाबले में मुंबई इंडियंस का सामना चेन्नई सुपर किंग्स से होगा। मैच से ज्यादा प्रशंसकों को रोहित शर्मा और महेंद्र सिंह धोनी को आमने-सामने देखने का इंतजार है। रोहित फिलहाल हैमस्ट्रिंग की चोट से उबर रहे हैं, उनके इस मैच में खेलने की उम्मीद है। वहीं, धोनी भी इस मैच से आईपीएल में वापसी कर सकते हैं। दोनों ही टीमें इस सीजन अब तक संघर्ष करती नजर आई हैं। छह मैचों में सिर्फ दो जीत के साथ मुंबई और चेन्नई अंक तालिका में पीछे हैं। सीएसके को चोटों ने काफी प्रभावित किया है, और उनके टॉप स्कोरर आयुष म्हात्रे भी अब पूरे सीजन से बाहर हो चुके हैं। मुंबई ने अब तक 20 खिलाड़ियों को आजमाया है, जो टीम के संतुलन की तलाश को दिखाता है। हालांकि, मुंबई ने अपने पिछले मैच में गुजरात टाइटंस के खिलाफ शानदार जीत दर्ज कर आत्मविश्वास हासिल किया है।

स्टालिन दूसरी बार सत्ता में आएंगे : पन्नीरसेल्वम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री और बोदिनायकानूर विधानसभा क्षेत्र से द्रविड़ मुन्नेत्र कज़गम (डीएमके) के उम्मीदवार ओ पन्नीरसेल्वम ने 23 अप्रैल को चल रहे राज्य विधानसभा चुनावों में अपने गठबंधन के प्रदर्शन पर विश्वास व्यक्त किया। थेनी में पत्रकारों से बात करते हुए पन्नीरसेल्वम ने कहा कि मैं लोगों में हमारे गठबंधन के लिए उत्साह देख सकता हूं। डीएमके प्रमुख एमके स्टालिन दूसरी बार सत्ता में आएंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा गठबंधन इस चुनाव में 200 से अधिक सीटें जीतेगा।

इससे पहले गुरुवार को, पन्नीरसेल्वम ने अपने परिवार के सदस्यों के साथ पेरियाकुलम जिले के टेनकराई, वार्ड संख्या 23, साउथ कार स्ट्रीट स्थित 7वें दिन के नर्सरी और प्राइमरी स्कूल में मतदान किया। पहले लंबे समय तक एआईएडीएमके से जुड़े रहे पन्नीरसेल्वम हाल ही में हुए राजनीतिक पुनर्गठन के बाद डीएमके उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं। तमिलनाडु में चुनाव 234 विधानसभा सीटों पर होंगे। मुख्य मुकाबला डीएमके के नेतृत्व वाले गठबंधन (जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, डीएमडीके और वीसीके शामिल हैं) और एआईएडीएमके के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के बीच होने की उम्मीद है, जिसमें भाजपा और पीएमके सहयोगी हैं। डीएमके अपने कल्याणकारी कार्यों के आधार पर चुनाव प्रचार कर रही है, जबकि एआईएडीएमके के नेतृत्व वाला एनडीए सत्ता में वापसी की कोशिश कर रहा है।

जनता 5 साल के शासन का जवाब देगी : अन्नामलाई

भाजपा के नेता और तमिलनाडु के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने कोयंबटूर दक्षिण में चुनाव प्रक्रिया पर चिंता व्यक्त करते हुए मतदाताओं से गुरुवार को बड़ी संख्या में मतदान करने का आग्रह किया। कोयंबटूर के पीएसजी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस के एक मतदान केंद्र पर अपना वोट डालने के बाद अन्नामलाई ने कहा कि हमारा दृढ़ विश्वास है कि कोयंबटूर दक्षिण में चुनाव प्रक्रिया दूषित है, लेकिन चुनाव आयोग ने अपनी दूरदर्शिता दिखाते हुए चुनाव कराया है। आज चुनाव आयोग का समर्थन करना हमारा कर्तव्य है। अन्नामलाई ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि लोग बड़ी संख्या में मतदान करने के लिए निकलेंगे। राज्य के विभिन्न हिस्सों में पिछले 3-4 दिनों में पूरी प्रक्रिया दूषित हो गई है। मुझे नहीं लगता कि चुनाव आयोग ने चुनाव पूर्व कार्य ठीक से किया है। हमने व्यक्तिगत रूप से अनुरोध किया है, और एक गठबंधन के रूप में भी, चुनाव आयोग को इस पर आगे की कार्रवाई तय करनी है। हमने अपना राजनीतिक कर्तव्य निभाया है।

हजरतगंज में सपा कार्यकर्ताओं का जोरदार प्रदर्शन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। गाजीपुर में सपा प्रतिनिधि मंडल पर पथराव के बाद लखनऊ में सपा में उबाल है। सपा ने प्रदर्शन के दौरान सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। बेटियों पर अत्याचार बंद करो, लिखे पोस्टर-बैनर के साथ विरोध किया।

सपा छात्र सभा और युवा सभा का हजरतगंज चौराहे पर प्रदर्शन किया। हजरतगंज पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया ।हिरासत में लिए गए सपा कार्यकर्ताओं को इको गार्डन भेजा गया। दोषियों को सजा दो की मांग को लेकर सपा का प्रदर्शन और तेज हो गया।

नाला सफाई के बाद सड़क पर सड़ रहा मलबा

» पांच दिन से नहीं उठी सिल्ट बीमारी का डर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजाजीपुरम मिनी स्टेडियम के पास लखनऊ नगर निगम के जोन-2 क्षेत्र में नाला सफाई के बाद निकली सिल्ट और कूड़े का ढेर पिछले पांच दिनों से सड़क पर ही पड़ा हुआ है। नाले की सफाई तो कर दी गई, लेकिन उसके बाद निकले मलबे को उठाने की जिम्मेदारी नगर निगम भूल गया है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि पूरी सड़क पर कूड़े और सिल्ट का अंबार लगा हुआ है, जिससे वहां से गुजरना भी मुश्किल हो गया है। गर्मी के मौसम में सड़ रही गंदगी से दुर्गंध फैल रही है और बीमारी फैलने का खतरा भी बढ़ गया है। इलाके के निवासियों ने बताया कि पांच दिन पहले नाले की सफाई हुई थी, लेकिन उसके बाद से नगर निगम की गाड़ी मलबा उठाने के लिए नहीं आई। लोगों का कहना है कि अगर जल्द ही इस सिल्ट को नहीं हटाया गया तो मच्छरों और गंदगी से डेंगू-मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है।

भाजपा को हराने के लिए बंगाल को कड़ी लड़ाई लड़नी होगी : डी राजा

बोले सीपीआई नेता -तमिलनाडु में डीएमके गठबंधन की जीत और भाजपा की हार होगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के लिए जारी मतदान के बीच, सीपीआई नेता डी राजा ने गुरुवार को डीएमके के नेतृत्व वाले गठबंधन की जीत और भाजपा की हार का विश्वास जताया। अपना वोट डालने के बाद मीडिया से बात करते हुए राजा ने मतदाताओं से बड़ी संख्या में मतदान करने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि मैं चेन्नई शहर का मतदाता हूं। मैं आया और अपना वोट डाला। मैं सभी मतदाताओं से अपील करता हूं कि वे आएं और अपने मताधिकार का प्रयोग करें। यह हमारे लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए एक महत्वपूर्ण अधिकार है... मेरा मानना है कि डीएमके के नेतृत्व वाला गठबंधन चुनाव जीतेगा और डीएमके सरकार बनाएगी। इसके अलावा, पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के संदर्भ में, उन्होंने भाजपा की कड़ी आलोचना की और जोर देकर कहा कि भाजपा को हराने के लिए बंगाल को कड़ी लड़ाई लड़नी होगी। उन्होंने कहा कि हमें इंतजार करना होगा और देखना होगा क्योंकि पश्चिम बंगाल में दो चरणों में चुनाव हो रहे हैं। मेरी राय में, और मेरी पार्टी की भी यही राय है, भाजपा को बंगाल में फायदा उठाने नहीं दिया जाना चाहिए। भाजपा को हराना होगा। जिस तरह तमिलनाडु भाजपा की विनाशकारी विचारधारा के खिलाफ लड़ रहा है, उसी तरह बंगाल की जनता को भी भाजपा से लड़ना होगा और उसे हराना होगा।

दीदी सबसे कठिन लड़ाई लड़ रहीं, पीएम मोदी हारेंगे : अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को अपना समर्थन देते हुए कहा कि उन्होंने फोन पर उनसे बात की और पूरी एकजुटता और समर्थन व्यक्त किया। पर एक पोस्ट में केजरीवाल ने कहा कि अभी ममता दीदी से फोन पर बात हुई। मैंने उन्हें पूरी एकजुटता और समर्थन दिया। वह सबसे कठिन लड़ाइयों में से एक लड़ रही हैं, जो भारतीय लोकतंत्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण लड़ाइयों में से एक है। मोदी जी हारेंगे, चाहे उन्होंने केंद्रीय चुनाव आयोग समेत सभी संस्थानों का दुरुपयोग किया हो। केजरीवाल की ये टिप्पणियां पश्चिम बंगाल में चल रही राजनीतिक खींचतान के बीच आई हैं, जहां तृणमूल कांग्रेस भाजपा के खिलाफ कड़ी टक्कर दे रही है। उनकी ये टिप्पणी भारतीय चुनाव आयोग द्वारा मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की भवानीपुर में प्रस्तावित रैली की अनुमति रद्द करने के एक दिन बाद आई है, जिससे तृणमूल कांग्रेस की ओर से तीखी प्रतिक्रिया हुई है। यह फैसला 23 अप्रैल को होने वाले पहले चरण के मतदान से कुछ ही दिन पहले आया है, जिसमें भवानीपुर भी शामिल है।

बंगाल में चुनाव कराए ही क्यों जा रहे : कपिल सिब्बल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल में वोटिंग जारी है। इसी बीच पूर्व कानून मंत्री कपिल सिब्बल ने निर्वाचन आयोग पर तीखा हमला किया है। उन्होंने आयोग पर पर पश्चिम बंगाल में मतदाताओं को उनके अधिकार से वंचित रखने का प्रयोग करने का आरोप लगाया और पूछा कि चुनाव कराए ही क्यों जा रहे हैं। राज्यसभा सदस्य ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर भी निशाना साधते हुए तंज किया कि उन्हें तो पद्म भूषण से सम्मानित किया जाना चाहिए।

कपिल सिब्बल ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, निर्वाचन आयोग (पश्चिम बंगाल चुनाव, मताधिकार छीनने का एक प्रयोग है। मुख्य निर्वाचन आयुक्त को पद्म भूषण से सम्मानित किया जाना चाहिए। मेरा सवाल, चुनाव कराए ही क्यों जा रहे हैं? पश्चिम बंगाल में गुरुवार को पहले चरण का मतदान हो रहा, जहां सियासी मुकाबला लगातार बेहद ध्रुवीकृत होता जा रहा है। इस चुनावी परिदृश्य में भ्रष्टाचार और रोजगार जैसे मुद्दे पीछे छूटते नजर आ रहे हैं। वहीं पहचान, नागरिकता और मतदाता सूची से नाम हटाए जाने का विवाद राजनीतिक बहस के केंद्र में है।

अमित जोगी को सुप्रीम कोर्ट से राहत

» एनसीपी नेता की हत्या के मामले में सजा और दोषसिद्धि पर लगी रोक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी के बेटे अमित जोगी को बड़ी राहत देते हुए उनकी सजा पर रोक लगा दी। छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट ने अमित जोगी को एनसीपी नेता रामअवतार जग्गी की 2003 में हुई हत्या के मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी, जिस पर अब सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है।

न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, संदीप मेहता और विजय बिश्नोई की पीठ ने अमित जोगी की विशेष अनुमति याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। अमित जोगी ने छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी थी, जिसमें उन्हें बरी करने वाले ट्रायल कोर्ट के फैसले को पलटते हुए दोषी करार दिया गया था और आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मामले की आगे की सुनवाई पूरी होने तक अमित जोगी की सजा पर रोक रहेगी।

यह मामला 4 जून 2003 को रायपुर में हुए एनसीपी नेता और कारोबारी राम अवतार जग्गी की हत्या से जुड़ा है। उस समय छत्तीसगढ़ में अजीत जोगी मुख्यमंत्री थे। राम अवतार जग्गी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी, जिसे एक बड़ी साजिश का हिस्सा बताया गया। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने हाल ही में अपने फैसले में अमित जोगी को आपराधिक साजिश और हत्या का दोषी ठहराया था।

ट्रंप ने फिर भारत के खिलाफ उगला जहर

» अमेरिकी राष्ट्रपति ने देश को हेलहोल बताया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनालउ ट्रंप ने में भारत और चीन के प्रवासियों को लेकर भी आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल किया गया। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने अमेरिकी रेडियो होस्ट माइकल सेवेज का एक पत्र दोबारा पोस्ट किया, जिसमें भारत, चीन और अन्य देशों को हेलहोल कहा गया है। इस पत्र में अमेरिकी जन्मसिद्ध नागरिकता कानून में बदलाव की मांग करते हुए नस्लवादी टिप्पणियां की गई हैं।

सैवेज ने अपने लंबे नोट में अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट में जन्मसिद्ध नागरिकता को लेकर चल रही बहस पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने गैर-नागरिकों के बच्चों को जन्म के आधार पर नागरिकता देने के प्रावधान का विरोध किया और कहा कि इस मुद्दे पर अदालत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जनमत संग्रह होना चाहिए। ट्रंप ने यह पोस्ट अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर उस बयान के एक दिन बाद शेयर की, जिसमें उन्होंने दावा किया था कि अमेरिका के अलावा दुनिया में कोई भी देश जन्मसिद्ध नागरिकता नहीं देता, हालांकि, वास्तविकता यह है कि करीब तीन दर्जन देश यह सुविधा देते हैं, जिनमें कनाडा, मेक्सिको और दक्षिण अमेरिका के अधिकांश देश शामिल हैं।

'जन्म लेकर नागरिक बनने' पर विवादित बयान

पत्र में सैवेज ने दावा किया कि दूसरे देशों के लोग अमेरिका आकर नौवें महीने में बच्चा पैदा करते हैं और इससे उन्हें तुरंत नागरिकता मिल जाती है, उन्होंने लिखा कि यहां जन्म लेने वाला बच्चा तुरंत नागरिक बन जाता है और फिर वे अपने पूरे परिवार को चीन, भारत या दुनिया के किसी 'हेलहोल' से यहां ले आते हैं।

पत्र में भारतीय और चीनी प्रवासियों को लेकर भी आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल किया गया है सैवेज ने उन्हें लैपटॉप वाले गैंगस्टर बताते हुए आरोप लगाया कि उन्होंने अमेरिकी झंडे का अपमान किया है। सैवेज ने यह भी आरोप लगाया कि मौजूदा व्यवस्था का बर्थ टूरिज्म और वेलफेयर योजनाओं के दुरुपयोग के जरिए फायदा उठाया जा रहा है।

महापौर की टिप्पणी से गरमाई सियासत, सपा-कांग्रेस का वॉकआउट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क/मो. शारिक

लखनऊ। लखनऊ नगर निगम के विशेष सदन की बैठक गुरुवार को शुरू होते ही हंगामे की भेंट चढ़ गई। सदन में नारी वंदन बिल पर चर्चा के लिए विशेष बैठक बुलाई गई थी, लेकिन समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के पार्षदों ने इसका जोरदार विरोध किया।

पार्षद सदस्य बाहर बैठे धरने पर

विपक्षी पार्षदों मुकेश सिंह चौहान ममता चौधरी कामरान बेग का कहना था कि इस मुद्दे पर विशेष सदन बुलाना उचित नहीं है। कांग्रेस ने इस संबंध में पहले ही महापौर को ज्ञापन देकर अपना विरोध दर्ज कराया था, वहीं समाजवादी पार्टी के पार्षदों ने बैठक कर सदन के अंदर और बाहर विरोध की रणनीति तैयार की थी। सदन की कार्यवाही शुरू होते ही सपा और कांग्रेस के पार्षदों ने नारेबाजी करते हुए हंगामा शुरू कर दिया। माहौल गरमाता देख दोनों दलों के पार्षदों ने सदन से वॉकआउट कर दिया और नगर निगम परिसर के बाहर धरने पर बैठ गए।बताया जा रहा है कि बीते बुधवार को भी सपा कार्यकर्ताओं ने महापौर के आवास पर विरोध प्रदर्शन किया था। आरोप है कि महापौर ने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की स्वर्गीय माताजी को लेकर टिप्पणी की थी, जिसके बाद से सपा नेताओं और कार्यकर्ताओं में नाराजगी बढ़ गई है। नगर निगम के विशेष सदन में हुए इस हंगामे के चलते बैठक की कार्यवाही प्रभावित रही और विपक्षी पार्षदों का धरना देर तक जारी रहा।

महापौर के समर्थन में नगर निगम का कड़ा रुख, 119 में से 93 पार्षदों ने पास किया निंदा प्रस्ताव

लखनऊ नगर निगम में बुधवार को हुए घटनाक्रम के बाद महापौर के समर्थन में बड़ा राजनीतिक फैसला सामने आया है। नगर निगम के विशेष सदन में 119 में से 93 पार्षदों ने एकजुट होकर निंदा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया। इस प्रस्ताव के जरिए उन लोगों की कड़ी आलोचना की गई, जिन पर नारी सम्मान को ठेस पहुंचाने का आरोप लगाया गया है।

महिलाओं के सम्मान के मुद्दे पर वह कभी समझौता नहीं करेंगी : महापौर

महापौर ने अपने वक्तव्य में कहा कि वह केवल लखनऊ की महापौर के रूप में नहीं, बल्कि एक सैनिक परिवार की बेटी, बहन और पत्नी के रूप में भी खड़ी हैं। उन्होंने कहा कि एक सैनिक की पत्नी होने के नाते उन्होंने अनुशासन और स्वाभिमान सीखा है और महिलाओं के सम्मान के मुद्दे पर वह कभी समझौता नहीं करेंगी। महापौर ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि कुछ नेताओं द्वारा उनकी दिवंगत मां के अपमान का आरोप लगाया गया, जिससे उन्हें गहरा आघात पहुंचा है। उन्होंने कहा कि वह स्वयं एक मां हैं और किसी भी मां का अपमान करना उनके संस्कारों में नहीं है। महापौर ने यह भी आरोप लगाया कि बुधवार सुबह उनके आवास पर कुछ कार्यकर्ताओं ने पहुंचकर उनकी नामपट्टिका पर जूते चलाए, जो न केवल उनका बल्कि लखनऊ के प्रथम नागरिक और एक सैनिक परिवार का भी अपमान है।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा